जीवन एवं कर्म की अनादि सत्ता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जीवन क्या है? जन्म से लेकर मृत्यु तक का समय जीवन कहलाता है। जो व्यक्ति जैसा कर्म करता है उसे वैसा जीवन प्राप्त होता है। कर्म एक ऐसी फसल है जो बोये जाने के बाद कई गुना प्रदान करती है। जो अच्छा बोता है वह अच्छा प्राप्त करता है और जो बुरा बोता है उसे बुराई ही प्राप्त होती है। इसलिए कर्म की फसल को बहुत सोच–समझकर बोना चाहिए। आत्मा के स्तर पर सभी प्राणी समान हैं। भेद शरीर के स्तर पर है। चौरासी लाख जीव योनियों में सभी प्राणी आत्मा के स्तर पर समान है, लेकिन कर्म से भिन्न शरीर वाले हैं। कर्म की गति बड़ी न्यारी है। कर्म का परिणाम बिना भोगे कर्म समाप्त नहीं होता है। सभी को अपने किये हुए का भुगतान करना ही पड़ता है। कर्म से जीवन प्राप्त होता है या जीवन से कर्म प्राप्त होता है यह बहुत बड़ा प्रश्न है। कर्म की सत्ता पहले है या जीव की इस विषय पर दार्शनिकों ने गम्भीर चिंतन किया है। पहले मुर्गी थी या पहले अण्डा इसका उत्तर बड़ा कठिन है। दोनों को समानान्तर भी नहीं कहा जा सकता, किन्तु इतना निश्चित है कि दोनों की सत्ता है।

सम्पूर्ण सृष्टि आत्मा और कर्म के सम्बन्ध पर चल रही है। जैसे एक कठपुतली को नचाया जाता है, वैसे ही प्रत्येक जीव जीवनभर कर्म के अधीन नाचता रहता है। मन, वचन और कायारूपी शरीर कर्म से चलती है। कर्म प्रभाव के कारण सुख और दुःख प्राप्त होता है। आत्मा एक चेतन तत्व है। आत्मा सचिदानन्द स्वरूप और अनन्त ज्ञान दर्शन और चरित्र से युक्त है। चेतना अरूपी है। इसे देखा या दिखाया नहीं जा सकता। सम्पूर्ण कर्म आत्मा के साक्षी से किये जाते हैं। आत्मा अजर, अमर, अविनाशी तत्त्व है। आत्मा संवेदन करती हैं। जड़ पदार्थ में संवेदना नहीं होती। आत्मा के बिना कर्म और कर्म के बिना आत्मा टिक नहीं सकता। कर्म जड़ पदार्थ है।

भारतीय दर्शन में कर्मशास्त्र का बड़ा वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। किसी दर्शन में अविद्या, किसी में अज्ञान आदि विभिन्न नामों से कर्म का विवेचन किया गया है। कर्म और आत्मा का सम्बन्ध अनादि है। जैन दर्शन के अनुसार आत्मा अनन्त ज्ञान दर्शन और चारित्र युक्त है। आत्मा पर कर्म का आवरण पड़ा रहता है। आत्मा और कर्म को जब अलग–अलग किया जाता है, तब आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जाता है। पुद्गल चतुःस्पर्शी होता है। कार्मण शरीर आत्मा के अनन्त गुण से जुड़ा है। जब कार्मण शरीर से आत्मा पृथक होता है तब आत्मा ज्ञानदर्शन चारित्र युक्त हो जाता है। तब आत्मा क्रिया नहीं करता। कर्म के सिद्धांतों का अध्ययन इस अन्तर को बिल्कुल स्पष्ट कर देता है। जिस प्रकार आनुवंशिकता जीवन से सम्बन्धित है, उसी प्रकार कर्म जीव से सम्बन्धित है, जिसमें पिछले कई जन्मों के कर्म और प्रतिक्रियाएं कर्म शरीर के रूप में संग्रहीत रहते हैं। इस कारण अलग–अलग व्यक्तियों की योग्यता और उसकी असाधारण प्रतिभा केवल वर्तमान जीवन पर ही आधारित नहीं होती, इसका मूल स्रोत इससे भी परे जीव से बधे हुए संग्रहीत कर्मों अर्थात् कार्मण शरीर में खोजा जा सकता है।

जीव विज्ञान यह विश्वास करता है कि शरीर का महत्वपूर्ण घटक जीन है। यह एक विशिष्ट गुणसूत्र है और अत्यन्त सूक्ष्म है। इसकी सूक्ष्मता मात्र अनुमान से होती है। प्रश्न है हमारी चेतना कहां रहती है? ये क्रोमोजोम्स में मौजूद रहती है या जीन्स में? इसी के कारण मनुष्य–मनुष्य के बीच में इतना अंतर पाया जाता है। व्यक्तियों का स्वयं का प्रयास एक जैसा नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति की चेतना भी एक जैसी नहीं होती। कर्म के सिद्धांत के अनुसार इस असमानता का कारण कर्म है। यदि आज के जीव वैज्ञानिक से ये प्रश्न पूछा जाये तो वह यह उतर देगा कि इस असामनता का कारण जीन्स है। जीन्स और क्रोमोजोम्स मानव के व्यक्तित्व का निर्धारण करते हैं। उसका स्वभाव और व्यवहार वैसा ही हो जाता है जैसे उसके जीन्स होते हैं। जीन्स ही समस्त असामनता के लिए जिम्मेदार हैं। जीवविज्ञान के अनुसार प्रत्येक जीन्स में साठ लाख आदेश होते हैं।

कर्म के सिद्धांत के अनुसार कर्म के प्रत्येक कण पर अनन्त निर्देश लिखे हुए होते हैं। विज्ञान केवल जीन्स तक पहुंचा है। जीन्स भौतिक शरीर का घटक है, परन्तु कर्म सूक्ष्म शरीर का

घटक है। भौतिक शरीर के भीतर एक विद्युत शरीर होता है, जो सूक्ष्म होता है और एक कर्म शरीर होता है जो उससे भी अधिक सूक्ष्म होता है। इसके प्रत्येक भाग में अनन्त शब्द अंकित होते हैं। हमारे स्वयं के प्रयासों, अच्छाई, बुरे कार्यों, सीमाओं और विशिष्टताओं के सारे रिकॉर्ड कर्म शरीर में उत्कीर्ण रहते हैं। मनुष्य कर्म शरीर से प्राप्त कंपनों के अनुसार ही व्यवहार करता है। कर्म का सिद्धांत अत्यन्त सूक्ष्म है।

आत्मा चेतनायुक्त है। आत्मा न तो कर्मों से बंधता है और न मुक्त होता है, ऐसा सांख्य दर्शन का मानना है। आत्मा या पुरुष और प्रकृति ये दो मुख्य तत्व है। प्रकृति कर्म करती है और वही बंधती है। परन्तु अज्ञान के कारण पुरुष प्रकृति के कार्य को अपना समझने लगता है यही उसका बंधन है। पुरुष जैसा कार्य करता है उसका फल भोगने के लिए शरीर धारण करता है। पुरुष के अज्ञान का कारण है कर्त्ताभाव। अनेक तत्वों के संयोग से किसी कार्य का निस्पादन होता है।